International Journal of Advanced Science and Research
ISSN: 2455-4227, Impact Factor: RJIF 5.12
www.allsciencejournal.com
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 56-57

अष्टादश पुराणों का विभाजनः एक विवेचन

नवीन

शोधछात्रा कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र गांव खानपुरा कलां, जिला झज्जर

प्रस्तावना

पुराण भारतीय संस्कृति का मेरूदंड है– वह आधार पीठ है जिस पर आधुनिक भारतीय समाज अपने नियमन को प्रतिष्ठित करता है। पुराण शब्द की व्युत्पत्ति पाणिनि, यास्क तथा स्वयं पुराणों ने भी दी है। 'पुरा भवम्' (प्राचीन काल में होने वाला) इस अर्थ में 'सायंचिरंप्राहेग्रप्रगेऽव्ययेभ्यष्टयुट्युलौ तुट् च'[1] सूत्र से 'पुरा' शब्द से 'ट्यु' प्रत्यय करने पर तथा तुट् के आगमन होने पर 'पुरातन' शब्द सिद्ध होता है। स्वयं पाणिनि ने अपने दो सूत्रों 'पूर्वकालैक– सर्व जरत् पुराणनव– केवलाः समानाधिकरणे'[2] तथा 'पुराणप्रोक्तेषु बह्मणकल्पेषु[3] में पुराण शब्द का प्रयोग किया है जिससे तुडागम का अभाव निपातनात् सिद्ध होता है। तात्पर्य यह है कि पाणिनी की प्रक्रिया के अनुसार 'पुरा' शब्द से 'टयू' प्रत्यय अवश्य होता है, परन्तु नियम प्राप्त 'तुट्' का आगम नही होता। 'पुराण' शब्द ऋग्वेद में एक दर्जन से अधिक स्थानों पर मिलता है। यास्क के अनुसार 'पुराण' की व्युत्पत्ति जो प्राचीन होकर भी नया होता है।[4] वायुपुराण[5] के अनुसार 'पुराण' शब्द की व्युत्पत्ति 'पुरा अनति' अर्थात प्राचीनकाल में जो जीवित था। 'पद्मपुराण[6] के अनुसार 'पुरा परम्परा वष्टि पुराणं तेन तत् स्मृतम्' की गई है।

<u>विभाजन</u> – मत्स्य पुराण के अनुसार पुराणों का त्रिविध विभाजन मान्य है– सात्विक, राजस, तामस। सात्विक पुराणों से विष्णु का माहात्म्य अधिक रूप से वर्णित है, राजस पुराणों में ब्रह्म का तथा अग्नि का माहात्मक अधिकांश वर्णित है। तामस पुराणों में शिव का वर्णन किया है। इन तीनों से भिन्न एक संकीर्ण भेद भी है जिसमें सरस्वती तथा पितृगणों का माहात्म्य अधिकतर वर्तमान है। पद्मपुराण में सात्विक पुराणों की गणना भी निर्दिष्ट है– वैष्णव, नारद, भागवत, गरूड़, पद्म तथा वाराह। परन्तु ध्यान देने की बात है कि इस विभाजन में अन्य पुराणों के साथ ऐकमत्य नहीं है, आश्चर्य तब होता है जब निश्चय रूपेण शिवभक्ति के प्रतिपादक वायु पुराण को गरूड़ पुराण सात्विक पुराणों के अन्तर्गत रखता है। फलतः इस विभाजन में वैज्ञानिकता की आशा करना दुराशामात्र है। गरूड़पुराण[8] एक पग आगे बढ़कर सात्विक पुराणों के भीतर तीन प्रकार का विभाग मानता है (क) सत्वाधम त्र मत्स्य तथा कूर्म (ख) सात्विक मध्यम–वायु (ग) सात्विक उत्तमत्रविष्णु, भागवत तथा गरूड़। देवता के प्राधान्य से पुराणों का विभाजन विद्वानों ने किया है। गरूड़ पुराण के कथन में कूर्म भी सात्विक अर्थात् विष्णुमाहात्म्य प्रतिपादक पुराणों के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है, परंतु इसके प्रकाशित अंश (ब्रह्म संहिता) में शिव–शिवा के माहात्म्य का ही पूर्णतः प्रकाशन है। महेश्वर ही परमतत्व माने गये है। शक्ति का भी विशिष्ट वर्णन है। श्री कृष्ण भी शिव की स्तुति करते हुए दिखलाए गए है। ऐसी दशा में इसे 'सात्विक' क्यों कर कहा जा सकता है? वायु पुराण का स्वरूप निश्चयेन शिव–माहात्म्यपरक है और इसी लिए यह पुराण में (शैव) नाम से ही अभिहित किया गया है। ऐसी दशा में इसमें पुराण सम्मत सात्विकता कहाँ? फलतः गरूड़ के पूर्वोक्त विभाजन में हम विशेष श्रद्धा नही रख सकते।

उपास्य देवों की विभिन्नता से पुराणों का विभाजन ऊपरवर्णित है। स्कन्दपुराण के केदार खंड के अनुसार दश पुराणों में शिव, चार में भगवान ब्रह्म, दो में देवी और दो में हरि– इस प्रकार विभाजन किया गया है। इसी पुराण के 'शिव रहस्य' नामक खंड के अन्तर्गत सम्भवकांड[9] में इसका विभाजन किया गया है जो इस प्रकार है–

1. शैव त्र शिव विषयक
   शिव, भविष्य, मार्कण्डेय, लिड्ग, वाराह
   स्कन्द, मत्स्य, कूर्म वामन तथा ब्रह्मण्ड
2. वैष्णव त्र विष्णु विषयक
   विष्णु, भागवत, नारदीय तथा गरूड़
3. ब्राह्म त्र ब्रह्मविषयक
   ब्रह्म तथा पद्म
4. आग्नेय – अग्निविषयक
   अग्निपुराण
5. सावित्र – सूर्यविषयक

स्कन्द पुराण के अनुसार प्रतिपाद्य देवानुसारी यह विभाजन वैज्ञानिकरीत्या शोभन नही माना जा सकता, क्योंकि 'पद्म पुराण' तो निश्चयेन भगवान् विष्णु की महिमा का सविशेषभावेन प्रतिपादक है। इसलिए गौंडीय वैष्णवों के सिद्धान्तों का विकास, विशेषतः राधा का, इसी पुराण के आधार पर है।

स्कन्द पुराण का विभाजन दो प्रकार से उपलब्ध है

(क) खंडात्मक विभाजन (ख) संहितात्मक विभाजन

1. माहेश्वर खंड	1. सनत्कुमार संहिता त्र 55000
2. वैष्णवी खंड	2. सूत संहिता त्र 6000
3. ब्रह्म खंड	3. शाङक्री संहिता त्र 30000
4. काशी खंड	4. वैष्णवी संहिता त्र 5000
5. अवन्ती खंड	5. बाह्मी संहिता त्र 3000
6. नागर खंड	6. सौरी संहिता त्र 1000
7. प्रभास खंड	

सन्दर्भ सूची

1. पाणिनी सूत्र, 4.3.23
2. पा० सू०, 2.1.4.9
3. पा० सू०, 4.3.105
4. निरुक्त, 3.19
5. वायु पुराण, 1.203
6. पद्म पुराण, 5.2.53
7. मत्स्य पुराण, 53.67–68
8. गरूपुराण, सत्वाधमे मात्स्यकौर्म तदाहुर्वायुं चाहुः सात्विकं– मध्यमं च।
   विष्णोंः पुराणं भागवतं पुराणं सत्वोत्तमें गारूड़ं प्राहुरार्याः।।
9. सम्भवकाण्ड, 2.30.38
10. स्कन्दपुराण, 10
11. स०पु०, 4